235
82.9 (P)
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1240/10/71
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 829
5/

829

स्वराज्य की गूँज

मुल्की तथा कौमी
नज़्मों का संग्रह

कविवर "अकसीर स्यालकोटी"

1/20|1

891.431 S115

सर्व अधिकार सुरक्षित हैं।

* बन्देमातरम् *

स्वराज्य की गूँज

कौमी तथा मुल्की नज़्मों का अद्भुत संग्रह

संग्रहकर्त्ता:—

कविवर "अकसीर स्यालकोटी"

प्रकाशक:—

नारायणदत्त सहगल ऐण्ड सन्ज़

पुस्तक विक्रेता लोहारी दरवाजा

लाहौर

दूसरीवार २०००] अगस्त १९३० [मूल्य ≡)

मुद्रक—लाला लाजजीदास

ऐंग्लो ओरियण्टल प्रेस, चेम्बर लैन रोड, लाहौर।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
23 FEB. 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 829
Date 22-12-71
GOVT. OF INDIA

वक्तव्य ।

—*—

आज भारत वासियों के हृदय में स्वतन्त्रता की लहरें उठ रही हैं! आज उनको अनुभव हो गया है कि पराधीनता में जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है! इस ख़ियाल से कि भारत वासियों के हृदय में जो स्वतन्त्रता की लहरें उठ रही हैं कम न हो जायें मैंने यह कौमी नज़्मों का संग्रह तैयार किया था! यह संग्रह कैसा हुआ है यह इस बात से प्रकट है कि पहले संस्करण की प्रायः २००० प्रतियां एक मास में ही ख़तम हो गईं और मांग इस क़द्र बढ़ गई कि इस छोटी सी पुस्तक का दूसरा ऐडीशन छपाना पड़ा।

आशा है कि जनता इस पुस्तक का प्रचार करके मेरा उत्साह बढ़ावेगी।

लाहौर
२८-७-१९३०

निवेदक:—
"अकसीर स्यालकोटी"

स्वराज्य की गूँज

प्रार्थना

(१)

झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊंचा रहे हमारा

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा।
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर बड़े जोश क्षन २ में,
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जाये भय संकट सारा।
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा।
आवो प्यारे वीरो आवो, देश जाति पर बलि बलि जावो,
एक साथ सब मिलकर गावो, प्यारा भारत देश हमारा।
इस की शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे,
विश्व विजय कर के दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा

(२)

प्यारा हिन्दोस्ताँ हमारा।

बुलबुल हैं हम वतन की, वह गुलिसतां हमारा।
प्यारे हम उस के, प्यारा हिन्दोसतां हमारा॥
यह तन हुआ हमारा, ख़ाके वतन से पैदा।
काम आयेगा वतन के, हर उस्तख्वां हमारा॥
दिल में वतन की उलफ़त, सर में वतन का सौदा।
नामे वतन हो यारब्ब, विरदे ज़बां हमारा॥
फ़सले बहार आये, गर गुलशने वतन में।
खूने जिगर से सींचे, हर नोजवां हमारा॥
हिन्दू हो या मुसलमां कह दें मुखालिफ़ों से।
"हिन्दी हैं हम, वतन है, हिन्दोस्तां हमारा॥"
गर ईश्वर ने चाहा, तो देखना कि इक दिन।
उड़ता हिमालिया पर, होगा निशां हमारा॥
हम अहद कर चुके हैं, मर जायेंगे वतन पर।
क्या कर सकेगा देखें, दौरे ज़मां हमारा॥
मिट जायेंगे वह खुद ही, 'हमदम' जहां के हाथों।
जो चाहते मिटाना, नामो निशां हमारा॥

(३)

भारत है जाँ हमारी ।

भारत है जाँ हमारी और जान है तो सब कुछ ।
ईमान वह हमारा, ईमान है तो सब कुछ ॥
मिट्टी से जिस के पल कर, हम सब बड़े हुये हैं ।
उस के लिये मरेंगे यह शान है तो सब कुछ ॥
खञ्जर चले चले गर, उफ़ भी नहीं करेंगे ।
परतन्त्रता में रह कर बस मान है तो सब कुछ ॥
आवे अजल भले ही फिर भी न हम डरेंगे ।
डर कर न हम हटेंगे यह आन है तो सब कुछ ॥
वीणा का तार चाहे, बिल्कुल न राग छेड़े ।
जीवन का तार फिर भी, गावेगा गान सब कुछ ॥
महज़ब जुदा है लेकिन, अहले वतन सभी हैं ।
तन, प्राण, धन, वतनपर कुरबान है तो सब कुछ ॥
मरना वतन पै सीखे, जीना वतन पै सीखे ।
इन्सान में अगर यह अरमाण है तो सब कुछ ॥

---

(४)

असीं नहियों हारना, भावें साडी जान जावे ।

बिजली ते अग्ग कोलों, पानी तुफ़ान कोलों ।

हनेरी भुंचाल कोलों, कदी नहीं हारना॥
तोप तलवार कोलों, गोलियां दी मार कोलों।
खण्डे दी धार कोलों, कदी नहीं हारना॥
कुरकी नीलामी कोलों, सख्त कलामी कोलों।
फांसी काले पानी कोलों, कदी नहीं हारना॥
दीन ईमान नाल, धर्म ज्ञान नाल।
मर्द दी ज़बान नाल, कदी नहीं हारना।
माझे दे शोर नाल, मालवे दे ज़ोर नाल।
दोआबे दे बोल नाल, कदी नहीं हारना।
राम दे प्यार नाल, शान्ति सबर नाल।
रब्ब सच्चियार नाल, कदी नहीं हारना॥

---

(५)

हम तो अपने बाजूओं में बालो पर रखते नहीं।

यह सबब है जो हमारी वह खबर रखते नहीं।
बेअसर नाले हैं कुच्छ ऐसा असर रखते नहीं॥
खानाये सय्याद से उड़ कर चमन तक जायें क्या।
हम तो अपने बाजूओं में बालो पर रखते नहीं॥
सर हथेली पर लिये हैं सर फरोशाने वतन।

तन से जो उतरे न सर ऐसा वह सर रखते नहीं॥
इस तरह तुम होगये हो किस लिये यूं बेखबर।
सब की रखते हो खबर मेरी खबर रखते नहीं॥
बे हुनर होकर हुये मशहूर 'बिसमिल' किस तरह।
सच तो यह है वह कोई ऐसा हुनर रखते नहीं॥

———

(६)

क़ौम देंदी ऐ वधाईयां जेलीं जान वालियो।

क़ौम देंदी ऐ वधाईयां जेलीं जान वालियो।
ख़ातिर देश दी मुसीबतां उठान वालियो॥
करदी रशक है दुनिया तिहाडे हौसले ते।
घर बार ते औलाद नूं रुलान वालियो॥
तिहाडा की मैं मुकाबला किसे नाल करां।
बांके सूरमो, जवानों उची शान वालियो।
हस्ती कैद ते जुरमाने दी की तिहाडे सामने।
हसरस के फांसी ते चढ़ जान वालियो॥
तुसी खौफे खुदा तों डरो तो सही।
डन्डे निहत्ते भाईयां ते बरसान वालियो॥
तुसीं चैन कदे भी नहीं पा सकदे।

साडे दुखियां दिलां नूं ओ दुखान वालियो ॥
खुश होवो न हुकामों ऐन्हां ताईं फड़के ।
तुसी सुतियां कलां नूं मुड़ जगान वालियो ॥
तिहाडा अल्लाह निगाहबान विच जेलां दे यारो ।
"आजिज़" कौम दे बेड़े नूं बन्ने लान वालियो ॥

---

(७)

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये कातिल में है ॥
राहरवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज़्ज़ते सहरा नवरदी दूरिये मंज़िल में है ॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ॥
आके मकतल में यह कातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत तेरे कदमों पर निसार ।
तेरी कुरबानी का चर्चा गैर की महफिल में है ॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमाणों की भीड़

एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल है ॥

---

(८)

गुलामी से जकड़ा हमारा वतन है ।

अनोखा निराला हमारा वतन है ।
हमें जानो दिल से प्यारा वतन है ॥
मुसीबत भी, आफ़त भी, जुलमो सितम भी ।
तेरे वास्ते सब गवारा वतन है ॥
हमें हों तमन्नायें जन्नत की क्यों कर ।
कि जन्नत से बढ़ कर हमारा वतन है ॥
निगाहों में रहता है मञ्ज़र वतन का ।
सफर में भी हमराह प्यारा वतन है ॥
करो पहिले आज़ाद अपने वतन को ।
गुलामी से जकड़ा हमारा वतन है ॥
न आलम से मतलब, न दुनिया से मतलब ।
हमारे लिये बस हमारा वतन है ॥

---

(९)

माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ।

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना ।
आज़ाद होगा, होगा आता है वह ज़माना ॥

खूँ खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का ।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना ॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जां निसार अपनी ।
हिन्दु मसीह मुस्लम गाते हैं यह तराना ।
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे ॥
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेलेडदू की यारो ।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

---

(१०)

शहीदे वतन दास

क्या लिखें आज़ाद होकर हम कहानी दास की ।
कैद ही में कट गई सारी जवानी दास की ॥
चलते फिरते खत्म हो यों ज़िन्दगानी दास की ।
सुबह पीरी बन गई शामे जवानी दास की ॥
जगमगा उठेगी दुनिया यह तमाशा देख कर ।
खाक के ज़र्रों से है रोशन निशानी दास की ॥

आस्माने पीर भी चक्कर में है गर्दिश में है।
रंग लाई देखिये क्या नौजवानी दास की ॥
पुर असर है दर्द में डूबी हुई है किस कदर।
दिल अगर है, तो सुनो दिल से कहानी दास की ॥
फ़ाक़ा मस्ती में भी मस्तों की तरह वह मस्त था।
गोया हिम्मत का नमूना थी जवानी दास की ॥
मिट नहीं सकती मिटाये गर्दिशे हफत आस्मां।
हश्र तक कायम रहेगी यह निशानी दास की ॥
खुलकर ऐ 'बिसमिल' यही दुनिया को भी कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये थी ज़िन्दगानी दास की ॥

---

(११)

हमें तो देश में बस देश राग गाना है।

हर एक छोटे बड़े को यही सिखाना है।
हमें तो देश में बस देश राग गाना है॥
कोई धनी है कि आक़िल है या सियाना है।
क़ज़ा के मुँह में तो हिर फिर के सब को जाना है ॥
मरे वतन के लिये जो मिटे वतन के लिये।
उसी का मुबारक जहां में आना है ॥

बिठाओ लाख कमीशन तो इस में क्या हासिल।
तुम्हारे हाथों से क्या ख़ाक हमको पाना है॥
ज़बान देके मुकरते हो हर घड़ी हर दम।
तुम्हारी बातों का कुछ भी नहीं ठिकाना है॥
गुबार दिल में जो रखते हो फायदा क्या है।
मिलाओ ख़ाक में हम को, अगर मिलाना है॥
यही है वक्त कि उठ बैठो अब वतन वालो।
तुम्हें जो रंग ज़माने में कुछ जमाना है॥

---

(११)

आज़ादी दी लगन।

ज़रा वी लगन आज़ादी दी लग गई जिन्हां दे मन दे विच।
ओह मजनूं वांग फिरदे ने हर सहरा हर वन दे विच॥
दिन नूं चैन करार न हरगिज़ मूल कदे ओह लैंदे ने।
उबड़ वाये नीन्दर दे विच उठ उठ के ओह बहन्दे ने॥
किसे वेले वी देख लवो एन्हां गोलियां दे विच रहन्दे ने।
हासिल किवें आज़ादी नूं कर लये ऐस सन दे विच॥
हक कहनों न टलदे ने ओह फांसी ते वी चाहड़ के।
सोना राख न हुन्दा ऐ अग्ग दे विच वी साड़ के।

ओहतां हिम्मत नाल पहाड़ां नूं छड्दे पाड़ के।
उलफत होवे आज़ादी दी जैसी सी कोहकन दे विच ॥
ज्यों परवाने शमा दे उत्ते तिड़ तिड़ करके सड़दे ने।
ईवें आशक आज़ादी दे हस रस फांसी चड़दे ने ॥
किसे वेले वी देख लवो न मौत कोलों ओह डरदे ने ॥
रख देंदे सर अपने नूं जा मशीन ओह गन दे विच ॥
मुल्क पिच्छे जिस ने जिन्द दित्ती मोया नहीं ओह ज़िन्दाऐ।
उसदी इस कुरबानी कोलों यूरूप भी शरमिन्दा ऐ।
उसदी याद कोलों नहीं गाफिल कोई हिन्दी बाशिन्दा ऐ ॥
घर कीता उसदी उलफत ने हर इक तन बदन दे विच ॥
दास ने दास मुलक दा बनना दसिया सब नूं खोल के ॥
मुल्क पिच्छे कीवें जिन्द दित्ती उस ने अपनी रोल के।
गल मेरी नूं सुन लवो यारो कन दे परदे खोल के ॥
नाम ओहदे ते रहमत बरसे ज्यों बारश सावन दे विच ॥
ऐस गुलामी दी ज़िन्दगी कोलों मौत ओह चन्गी जान के।
तोपां किरच बन्दूकां आगे निकलन सीने तान के ॥
देंदे जान खुदा दी सौंह ओह हस रस खुशियां मान के ॥
खिलअत समझ आज़ादी दा जा वड़दे ने कफन दे विच ॥

———

(१३)

चरखा कातो तो बेड़ा पार है ।

बहिनों चरखे से हार श्रृंगार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

चरखा फूकेगा माल विदेशी ।
चरखा कातेगा माल स्वदेशी ॥

चरखा स्वदेशी की तलवार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

बहिनों ! गांधी जी का फरमान है ।
"चरखा भारत का कल्याण है ॥"

इस में आज़ादी का आसार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

चरखा चर्ख को नीचा दिखायेगा ।
चरखा स्वराज्य की राह बतायेगा ॥

इस से यूरूप का आज़ार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

इस से होंगे "शरर" ज़ीशान फिर ।
होगा फखरे आलम हिन्दुस्तान फिर ॥

इसी चरखे पै दारो मदार है ।
चरखा कातो तो बेड़ा पार है ॥

———

(१४)

गुलामी से तुम को छुड़ायेगा गाढ़ा ।

किसी को जहां से मिटायेगा गाढ़ा ।
किसी को जहां में बनायेगा गाढ़ा ॥
तरक्की पै अपनी जब आयेगा गाढ़ा ।
तो हर सिम्त जलवा दिखायेगा गाढ़ा ॥
बदेशी को छोड़ो स्वदेशी को पहनो ।
गुलामी से तुम को छुड़ायेगा गाढ़ा ॥
यह डीवन का लट्ठा नहीं नैन सुख है ।
यह मलमल के पुरज़े उड़ायेगा गाढ़ा ॥
बनेगी कभी इस की शाहों की कलगी ।
जगह फर्के आलम पै पायेगा गाढ़ा ॥
न डर "नाज़" गाढ़ा पहनने से हर गिज़ ।
बला बन के तुझ को न खायेगा गाढ़ा ॥

———

(१५)

शहीद का शव

देखो जाता है ज़नाज़ा, कुश्ताये वेदाद का ।
इन्क़लाब अय इन्क़लाब ! उठ वक्त है इमदाद का ॥

सूये मक़तल वह गया, सर से कफ़न बांधे हुए।
आओ देखें हम भी जौहर ख़ञ्जरे फौलाद का॥
लेनिन व मेज़नी व वाशिंगटन नैपोलियन।
आओ देखो यह जनाज़ा हिन्द के फरहाद का॥
ख़ैर मक़दम के लिये, आगे बढ़ो आगे बढ़ो।
यह जनाज़ा आ रहा है कुश्ताये बेदाद का॥
तुम पुजारी थे जो आज़ादी के यह भी एक है।
सीने में था दर्द और टुकड़ा था दिल फौलाद का॥
कहते हैं यूं कुश्तगाने, खंजरे तस्लीम रो।
मौत से डरते नहीं क्या खौफ है जल्लाद का॥

---

(१६)

शहीदे वतन की आरज़ू।

आरज़ू है कि चले ऐसी हवा मेरे बाद।
अपनी हस्ती से हो बेज़ार जफ़ा मेरे बाद॥
शान व इज्ज़त हो नसीब अपनी जन्म भूमि को।
मरतबा इसका जहां में हो सवा मेरे बाद॥
मैं न हूंगा तो मेरी ख़ाक से उट्ठेगी सदा।

'प्यारे भारत ! तेरा क्या हाल हुआ मेरे बाद' ॥

जज़्बय-हुब्बेवतन में हो तलातम पैदा।
सर फरोशी की चले खूब हवा मेरे बाद ॥
आज ईसार की दौलत है तुम्हारा ईमां।
बात जब है रहे कायम यह अदा मेरे बाद ॥
मादरे हिन्द पै कुरबान है यह जाने अज़ीज़।
हर ज़वां की हो जबाँ पर यह सदा मेरे बाद ॥
मैं तुम्हारे ही लिये अहले वतन मिटता हूं।
"याद आयेगी तुम्हें मेरी वफ़ा मेरे बाद ॥"
चलते चलते मैं हकूमत से कहे जाता हूं।
ठोकरें खायेगी यह तेरी जफ़ा मेरे बाद ॥

---

(१७)

चरखा हमको शाद करेगा।

बन्दों को आज़ाद करेगा।
दुश्मन को बरबाद करेगा ॥
उजड़ा देश आबाद करेगा ।
चरखा हमको शाद करेगा ॥

जुल्म अगर सय्याद करेगा ।
बेकस पर बेदाद करेगा ॥
वह भी कुछ कुछ याद करेगा ।
चरखा हमको शाद करेगा ॥

चरखे की जब तान चलेगी ।
दुश्मन की कब दाल गलेगी ॥
आई आफत सर से टलेगी ।
चरखा हमको शाद करेगा ॥

चरखे से तुम रिश्ता जोड़ो ।
पर देशी कपड़े अब छोड़ो ।
दुशमन की हर आशा तोड़ो ।
चरखा हमको शाद करेगा ॥

चरखे से हम सूत निकालें ।
अपना कपड़ा आप बनालें ॥
कौआ छोड़े हँस की चालें ।
चरखा हमको शाद करेगा ॥

चरखे से स्वराज मिलेगा ।
तख्त मिलेगा ताज मिलेगा ॥

हमको अपना राज मिलेगा ।

चरखा हमको शाद करेगा ॥

---

(१८)

चलो जेलखाने चलो जेलखाने ।

सुनो गोशे दिल से ज़रा यह तराने ।
अनोखे निराले हैं जग के फसाने ॥
कहीं शोरे मातम कहीं शादियाने ।
इसी तरह कटते रहेंगे ज़माने ॥
करो थोड़ी हिम्मत न ढूंढो बहाने ।
चलो जेलखाने, चलो जेलखाने ॥
तुम्हारी सदा कोई माने न माने ।
मगर तुम यह जाकर कहो हर ठिकाने ॥
कि हर शख्श अपने फर्ज़ों को जाने ।
बला से जो छुट जायें अपने बेगाने ॥
करो थोड़ी हिम्मत न ढूंढो बहाने ।
चलो जेलखाने, चलो जेलखाने ॥
खुदा ने रसूलों को भी आज़माया ।

बला की कसौटी पर रख कर कसाया ॥
सदाकत का जब मुदई तुम को पाया।
पैये आज़माइश है यह वक्त लाया ॥
करो थोड़ी हिम्मत न ढूंढो बहाने।
चलो जेलखाने, चलो जेलखाने ॥

समझते थे ज़िल्लत का घर जेलखाना।
कि था चोरो बदकार का यह ठिकाना ॥
हुआ जब से वां पेशवाओं का जाना।
बना फ़करो इज्ज़त का यह इक ख़ज़ाना ॥
करो थोड़ी हिम्मत न ढूंढो बहाने।
चलो जेलखाने, चलो जेलखाने ॥

---

(१९)

बन्दे मातरम्

कौम के खादिम की है जागीर बन्दे मातरम।
है वतन के वास्ते अकसीर बन्देमातरम ॥
ज़ालिमों को है उधर बन्दूक पर अपनी ग़रूर।
है इधर हम बेकसों का तीर बन्दे मातरम ॥
क़त्ल कर हमको न ऐ क़ातिल हमारे खून से।

[१९]

तेग़ पर हो जायेगा, तहरीर बन्दे मातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे जबकि क़िस्मत में मेरी।
लिख चुका है राक़मे तक़दीर बन्दे मातरम् ॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर क़तल पर बांधी कमर।
रोक देगा दूर से शमशीर बन्दे मातरम् ॥
जुल्म से गर कर दिया, खामोश मुझको देखना।
बोल उट्ठेगी मेरी तसवीर बन्दे मातरम् ॥
सर ज़मीं इङ्गलैण्ड की हिल जायेगी दोरोज़ में।
गर दिखायेगा कभी तासीर बन्दे मातरम् ॥
सन्तरी भी मुज़तरिब थे जबकि हर झंकार पर।
बोलती थी जेल में ज़ंजीर बन्दे मातरम् ॥

———

[२०]

वतन का तराना

भारत वतन हमारा, आरामे जाँ हमारा।
क़ायम है इसके दमसे नामो निशाँ हमारा ॥
यह है ज़मीं हमारी यह आस्माँ हमारा।
इसके सिवा ठिकाना आखिर कहाँ हमारा ॥

हिन्दोस्ताँ के हम हैं हिन्दोस्ताँ हमारा।

बेकद्र मुल्क हैं सब इसकी फज़ा के आगे।
जन्नत खजिल है इसकी आबोहवा के आगे॥
सर बादशाह के ख़म हैं इसके गदा के आगे।
शाहों का ज़िक्र क्या है कहदें खुदा के आगे॥

हिन्दोस्ताँ के हम हैं हिन्दोस्ताँ हमारा॥

यह है चमन हमारा हम सब हैं इसके माली।
नख़ले मोराद है इस गुलशन की डाली डाली॥
पुज़मुरदा रुख़ पै इसके लायेंगे हम बहाली।
कान्टों से अब करेंगे इस गुलस्तां को खाली॥

हिन्दोस्ताँ के हम हैं हिन्दोस्ताँ हमारा।

भारत के कलबे मुज़तिर को शाद हम करेंगे।
भूले फसाने इसके फिर याद हम करेंगे॥
सारी कमाई अपनी बरबाद हम करेंगे।
इस गुलस्तां को इकदिन आबाद हम करेंगे॥

हिन्दोस्ताँ के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा।

बोये हैं बीज हमने जो हर तरफ वतन में।
सींचेंगे उनको उससे जो खून है बदन में॥

सहरा में चुन्द बोले बुलबुल रहे चमन में।
गैरोंका काम क्या है आशिककी अञ्जमन में॥
हिन्दोस्तां के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा।
मिटने के दिन गये अब आबाद होगा भारत।
दुनिया में रशके बज़्मे ईजाद होगा भारत॥
ग़म का ज़माना गुज़रा अब शाद होगा भारत।
आज़ाद होगा भारत, आज़ाद होगा भारत॥
हिन्दोस्तां के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा।
फैलेगी रोशनी फिर इस तीरा खाकदां से।
इसकी ज़मीं सवा है रफइत में आस्मां से॥
मिट्टी अज़ीज़ इसकी हमको है कुल जहाँ से।
निकलेगा मरते दम भी "हामिद" यही ज़बाँ से॥
हिन्दोस्ताँ के हम हैं हिन्दोस्ताँ हमारा।

असहयोग की किश्ती

(२१)

वह हिन्द जिसको गैरते बागे जिन्नाँ कहें।
वह हिन्द जिसको वाकई जन्नत निशां कहें॥
खतरा जहां वबा का कैहत का नहीं।

अफ़लास से कोई भी जहां आशना नहीं ॥
परदा नहीं दिलों पै तअस्सुब के ज़ंग का ।
ज़िन्हार इमतियाज़ नहीं नसलो रंग का ॥
लैलो नहार रहता है तारी सकूने अदल ।
चढ़ता नहीं वक़ार की गर्दन पै खूने अदल ॥
हुब्बे वतन को जुर्म समझता नहीं कोई ।
बदख़ाह खादमाने वतन का नहीं कोई ॥

अलमुख्तसिर जहां में है मसावात का अमल ।
होता है इस असूल पै सुबहो मसा अमल ॥
पाती है ख़ल्क़ समराये किशते अमल जहां ।
छिन्ता नहीं किसी से भी महनत का फल जहां ॥

वह हिन्द जिसमें हिन्द के लोगों का राज है ।
वह हिन्द जिसकी आरजू हम सबको आज है ॥
वह हिन्द मुखतिलफ़ है जो इस हिन्द से बुहत ।
बेताब अहले हिन्द हैं जिस के लिये बुहत ॥
वह हिन्द जिसको रखता था पेशे नज़र तिलक ।
रहता था जिसकी राह में गरमे सफ़र तिलक ॥

मुज़दा हो तिफलो पीर को खुरदो कलां को आज।
किशती रवां है यह उसी हिन्दोस्तां की आज ॥
यह किशतीये अजीव अदीमुल मिसाल है।
"गांधी" का इसकी साकत से ज़ाहिर कमाल है ॥
तूफान का इस पै हो नहीं सकता असर कभी।
होती नहीं हवा से यह ज़ेरो ज़बर कभी ॥
सब किशतीयों से वेशवर आसायश इसमें है।
हर अहले मुल्क के लिये गुञ्जायश इस में है ॥
इक बात इसमें और भी है लुत्फ खेज़ यह।
जितनी भरी हो उतनी ही चलती है तेज़ यह ॥
सब रहनुमा हमारे इसी में स्वार हैं।
जो हुब्बे मुल्को कौम के सरमाया दार हैं ॥
बहरे स्यास्यात के सब आशना हैं यह।
जिन पर खुदा का हाथ है वह ना खुदा हैं यह ॥
ज़िन्हार कीजिये न मज़ीद इन्तज़ार अब।
हो जाइये बस आप भी इसमें स्वार अब ॥

———

देश भक्त कैदी जेल में

(२२)

खुश हो के मूंज कूटेंगे चक्की चलायेंगे।
कोल्हू, कूँआ, खरास खुशी से फिरायेंगे॥
ज़िन्दां की कच्ची रोटियां खुश होके खायेंगे।
और अधभुने चने भी खुशी से चबायेंगे॥
रञ्जो गमो अलम में भी खुशियां मनायेंगे।
सख्ती तमाम झेलेंगे कड़ियां उठायेंगे॥
दर्दो महन में फँस के न गर्दन झुकायेंगे।
मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे॥
खुद सहके जुल्म जुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
भारत के हालेज़ार को बेहतर बनायेंगे॥

---

(२३)

हिन्दोस्तां मेरा

पसे मुर्दन भी होगा हश्र में यूं हो बियां मेरा।
मैं इस भारत की मिट्टी हूं यह हिन्दोस्तां मेरा॥
मैं इस भारत के इक उजड़े हुये खंडर का ज़र्रा हूं।

यही मेरा पता है, है यही नामों-निशां मेरा ॥
खिज़ां के हाथ से मुरझाये जिस गुलशन के हैं पौदे ।
मैं उस गुलशन की बुलबुल हूं वही है गुलस्तांमेरा ॥
कभी आबाद यह घर था किसी गुज़रे ज़माने में ।
हुआ क्या गर बदस्ते गैर उजड़ा खानमां मेरा ॥
अगर यह प्राण तेरे वास्ते जायें न ऐ भारत ।
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामो-निशां मेरा ॥
मैं तेरा हूं, सदा तेरा रहूंगा बावफा खादिम ।
तूही है गुलस्तां मेरा तूही जन्नत निशां मेरा ॥
मेरे सीने में तेरे प्रेम की अग्नी भड़कती है ।
निगाहों में मेरे भारत तूही है कुल जहां मेरा ॥

---

(२४)

स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ।

बलायें आयें हज़ार सर पर स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ।
सताये हमको हज़ार कोई स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ।
ज़ालम सितम जो ढाये हमपर तो प्राण हँस हँसके वारदेंगे
मगर कहेंगे यह मरते मरते स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
हज़ार आरडनैंन्स हों गरचे जारी हों वाकयलाख जलियांवाले ।
ज़बान में लग जायें चाहे ताले स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
खियाल आज़ाद ही रहेगा मशीन गन से चाहे उड़ादो ।
यह होगी आवाज़ बादे मुरदन स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥

---

(२५)

खद्दर

हम खद्दर को अपनायेंगे।

अब न छुयेंगे वस्त्र विदेशी जिस पर अकड़ रहे परदेशी।
कीमत चाहे लग जाये बेशी, देशी वस्त्र बनायेंगे॥ हम०
चिकन नैनसुख को छोड़ेंगे नाता मलमल से तोड़ेंगे।
मुख मलमल से हम मोड़ेंगे अलफा सर्ज हटायेंगे। हम०
सकल विदेशी वस्त्र हटाकर फैशन का बस धता बताकर।
घर घर में चर्खा चलवाकर, रोजी खूब बनायेंगे॥ हम०
रोवें मान चेष्टर वाले, झल्लायें लङ्का शायर वाले।
पड़े हमें भी जीवनलाले, हम फिर भी न गम खायेंगे॥ हम०
खद्दर ही हो विश्व हमारा, खद्दर हो सर्वस्व हमारा।
खद्दर ही मम जीवन तारा, खद्दर मय हो जावेंगे॥
हम खद्दर को अपनायेंगे।

---

[२६]

नौजवानो वक्त है मिट जाओ कौमी आन पर।
देखना बट्टा न लग जाये वतन की शान पर॥
खिरमने हिन्दोस्तान पर बिजलियां टूटा करें।
हैफ है फिर भी न जूँ रींगे तुम्हारे कान पर॥
चहचहाना भूल जाओ अब वतन खतरे में है।
बुलबुलो क्या देखती हो खेल जाओ जान पर॥

कसरे आज़ादी की राहों का पता लग जायेगा।
गर नज़र डालो जरा तुम चीन और जापान पर॥

---

(२७)

दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर।
हमको भी पाला था मां बाप ने दुःख सब सहकर॥
वक्ते रुखसत उन्हें इतना भी न आये कह कर।
गोद में आंसू कभी टपके जो दुःख से बह कर॥
तिफल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।
देश सेवा ही का बहता है लहू नस नस में॥
अब तो खा बैठे हैं चितौड़ गढ़ की कस्में।
सर फरोशी की अदा होती हैं यूं ही रस्में॥
भाई खञ्जर ले गले मिलते हैं सब आपस में।
बहनें तैय्यार चिताओं पै जल जाने को॥
नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके।
याद कर लेना कभी हम को भी भूले भटके॥
आप के उज़वे बदन होवें जब कट कट के।
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके॥
पर न माथे पै शिकन आये कसम खाने को।
अपनी किस्मत में अज़ल से ही सितम रखा था॥
रंज रखा था महन रखा था गम रखा था॥
किसको परवा थी और किसमें यह दम रखा था॥

हमने जब वादिये गुरबत में कदम रखा था।
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को॥
अपना कुछ गम नहीं पर यह खियाल आता है।
मादरे हिन्द पै कब तक यह जवाल आता है॥
देश आजादी का कब हिन्द में साल आता है।
कौम अपनी पै तो रह रह के मलाल आता है॥
मुन्तज़िर रहते हैं हम खाक में मिल जाने को।

वतन का राग

(२८)

ज़मीन हिन्द की रुतबा में अर्श आला है।
यह होमरूल की उम्मीद का ओजाला है॥
बड़े बड़ों ने ही इस आरज़ू को पाला है।
फ़कीर कौम के हैं और यह रागमाला है॥
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥
वतन परस्त शहीदों की खाक लायेंगे।
हम अपनी आंख का सुरमा उसे बनायेंगे॥
गरीब मां के लिये दर्द दुख उठायेंगे।
यही प्यामे वफा कौम को सुनायेंगे॥
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥
हमारे वास्ते ज़न्जीरो तौक गहना है।
वफा के शौक में 'गांधी' ने जिसको पहना है॥

समझ लिया कि हमें रंजो दर्द सहना है।
मगर ज़बां से कहेंगे वही जो कहना है॥
तलब फजूल है कांटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥
पहनाने वाले अगर बेड़ियां पहनायेंगे।
खुशी से कैद के गोशा को हम बसायेंगे।
जो सन्त्री दरे ज़िन्दां के सो भी जायेंगे।
यह राग गा के उन्हें नींद से जगायेंगे॥
तलब फ़जूल है कांटे की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥

---

(२९)

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या।
दिल की बरबादी के बाद इसका प्याम आया तो क्या॥
काश अपनी ज़िन्दगी में हम यह मन्ज़र देखते।
बरसरे तुरबत कोई महशर खराम आया तो क्या॥
ऐ दिले नाकाम मिट जा अब तो कूचे यार में।
फिर मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या॥
मिट गईं जब सब उम्मीदें मिट गये सारे खियाल।
उस घड़ी गर नामाबर लेकर प्याम आया तो क्या॥
आखरी शब दीद के काबिल थी 'बिस्मिल' की तड़प।
सुबह दम कोई अगर बालाये बाम आया तो क्या॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 829
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

सब से बड़ी और अनूपम भजन पुस्तक।

मनोहर पुष्पाञ्जलि ! (सचित्र)

ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, प्रभु प्रेम, मातृबन्दना, रामायण की शिक्षा, प्राचीन भारत की महत्ता, हमारी हीन अवस्था और उसके कारण, अछूतों का आर्त्तनाद और शुद्धि, आवाहन, धर्मवीरों की वीरता। शहीद सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द और आर्य्य समाज आदि विषयों पर अनेक उत्तम २ कवियों तथा प्रसिद्ध २ गायकों के भजन चुन २ कर इस पुष्पाञ्जलि को सजाया गया है। ईश्वर स्तुति के भजन गाते हुए आपका हृदय धीरे २ उस असीम अनन्त की ओर बढ़ चलेगा, जिसके लिये सब भटकते हैं। इसी तरह अन्य भजनों के साथ भी। यदि आप क्रमपूर्वक एक २ भजन को गाते या पढ़ते चले जायें तो प्रभु प्रेम में सराबोर होते हुए, हृदय में साहस लेते हुए आप अपने देश की, ओर आंख उठाकर देखेंगे। फिर धीरे २ आपकी कल्पना प्राचीन भारत की महत्ता में ऊंची उड़ान लेने लगेगी।

भजनों का इतना अच्छा संग्रह है कि आप चकित हुए बिना रह नहीं सकते। इस प्रकार के इसमें ३०० भजन हैं और ऐंटिक पेपर पर छपी है। इतना कुछ होते हुए भी दाम केवल ॥।)

पता—नारायणदत्त सहगल ऐण्ड सन्ज़ लोहारी गेट लाहौर।

बिलकुल नई पुस्तक ! अवश्य पढ़िये !!

वर्त्तमान भारत (सचित्र)

यह मूल अँगरेज़ी पुस्तक **"माडर्न इण्डिया"** के लेखक **श्री० आर० पामीदत्त** (सम्पादक "लेबर मन्थली") की पुस्तक का अनुवाद है। अनुवाद अच्छा किया गया है। विदेशी शासन में भारत किस तरह लूटा गया और उस लूट से बचने का क्या उपाय है; इन्हीं सब विषयों पर इस उपयोगी पुस्तक में विचार किया गया है। "साम्राज्यवाद की नींव" "भूमि पर अनुचित दबाव" "कृषक मज़दूर तथा राष्ट्रीय आन्दोलन" "साम्प्रदायिक समस्या" आदि महत्वपूर्ण विषयों पर यथोचित प्रकाश डालने के अतिरिक्त "भारत और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दल" पर विचार करके श्रमजीवियों के अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन से भी भारत का सम्बन्ध दिखाया गया है। भारत की राजनीतिक दुरवस्था जानने के लिये इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिये। अनुवाद की भाषा बहुत ही सरल और सरस है। काग़ज़ और छपाई साफ़ और बढ़िया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २), सादी का १॥)

(हिन्दू-पञ्च कलकत्ता)

मिलने का पताः—

नारायण दत्त सहगल एन्ड सन्ज़

लाहौरी दरवाज़ा लाहौर।